HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-III, (Administrative System of Sultanate period -2)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 95

सल्तनत कालीन प्रशासनिक व्यवस्था

(Administrative System of Sultanate period)

भाग ----2

प्रांतीय शासन---

दिल्ली सल्तनत अनेक प्रान्तों में बंटा था जिसे 'इक्त्ता' कहा जाता था। यहां का शासन 'नायब वली' व मुक्ति द्वारा संचालित किया जाता था।

स्थानीय प्रशासन--

लगभग 14 वीं शताब्दी में प्रशासकीय सुविधा के लिए इत्ताओं को शिकों (जिलों) में विभाजित किया गया । यहाँ का शासन अमील या नजीम अपने अन्य सहयोगियों के साथ करता था । एक शहर या सौ गांवों के शासन की देख-भाल अमीर-ए-सदा नामक अधिकारी करता था। इसकी सहायता के लिए मुतसर्रिफ, कारकून, बलाहार, मुकद्दम, चौधरी, पटवारी आदि होते थे। शासन की सर्वाधिक छोटी इकाई गांव होता था। जहाँ का शासन पंचायतें करती थी। गाँवों में मुकद्दम (मुखिया), पटवारी व कारकून होते थे।

सैन्य संगठन--

तुर्की शासन व्यवस्था मुख्यत: सैन्य शक्ति पर आधारित थी । एक विशाल, संगठित, शक्तिशाली सेना की आवश्यकता सुल्तान को रहती थी । ऐसी सेना की आवश्यकता के कारणों में तुर्की अमीरों, सरकार द्वारा किये गये विद्रोह को कुचलने, राजपूत राजाओं की विद्रोहात्मक प्रवृत्ति से निपटने, मंगोलों के आक्रमण को रोकने एवं सुल्तानों की साम्राज्य विस्तार की नीति को सफल बनाने आदि शामिल थे और इन कार्यों के लिए विशाल एवं संगठित स्थायी सेना की आवश्यकता रहती थी।

सल्तनत कालीन सैन्य व्यवस्था के अन्तर्गत इल्तुतमिश द्वारा स्थापित सेना को हश्म-ए-कल्ब (केन्द्रीय सेना) या कल्ब ए-सुल्तानी कहा जाता था । इल्तुतमिश के समय में सामन्तों व प्रांतपतियों की सेना को (हश्म-ए-अतरफ) कहा गया । शाही घुड़सवार सेना को बार-ए-क्लब कहा जाता था । सल्तनत कालीन सेना का ढाँचा राष्ट्रीय नहीं था बल्कि इसमें तुर्क, अमीर, ईरानी, मंगोल, अफगान व भारतीय मुसलमान शामिल होते थे।

सल्तनत काल में चार प्रकार सैनिक होते थे।

प्रथम वे सैनिक होते थे जिनको स्वयं सुल्तान नियुक्त करता था । यह सुल्तान की स्थायी सेना होती थी। इसे खासखेल का नाम दिया गया था। अलाउद्दीन खिलजी के समय में लगभग पौने पाँच लाख की स्थायी सेना थी ।

द्वितीय वे सैनिक होते थे, जो प्रान्तों एवं सूबेदार की सेना में भर्ती होते थे। प्रान्तीय अरीज इस सेना की देखभाल इक्तादारो के नेतृत्व में करते थे यह सेना वर्ष में एक बार सुल्तान के समक्ष निरीक्षण हेतु प्रस्तुत की जाती थी ।

तृतीय वे सैनिक होते थे जिन्हें युद्ध के समय अस्थायी रूप से भर्ती किया जाता था। इनको युद्ध काल तक ही वेतन एवं रसद प्राप्त होता था।

चौथे व सैनिक होते थे जो मुस्लिम स्वयंसेवक के रूप में काफिरों से युद्ध करते थे, इन्हें कोई वेतन नहीं मिलता था।

सल्तनत कालीन सेना मुख्यतः तीन भागों में विभक्त थी-

(1) घुड़सवार सेना

(2) गज (हाथी) सेना

(3) पदाति (पैदल) सेना या पायक' सेना, संख्या की दृष्टि से यह भाग सबसे बड़ा होता था परन्तु सामरिक दृष्टिकोण से सेना का महत्वपूर्ण भाग घुड़सवार सेना होती थी।

मंगोल सेना के वर्गीकरण की दशमलव प्रणाली को सल्तनत कालीन सैन्य व्यवस्था का आधार बनाया गया। सल्तनत काल में सेना का गठन, पदों का विभाजन आदि दशमलव प्रणाली पर ही आधारित थे । दस अश्वारोहियों की एक टुकड़ी को 'सर-ए-खेल' दस सर-ए खेलों की एक टुकड़ी के ऊपर एक सिपहसालार', दस सिपहसालारों के ऊपर एक 'अमीर', दस अमीरों के ऊपर एक मलिक दस मलिकों के ऊपर एक खान होता था।

दस अश्वारोही = 1 सर-ए-खेल

दस सर-ए-खेल = 1 सिपहसालार

दस सिपहसालार - 1 एक अमीर

दस अमीर - 1 मलिक

दस मलिक = 1 खान

सल्तनत काल में बारूद की सहायता से गोला फेंकने की मशीन को 'मांगलिक' तथा 'अर्राद' कहा जाता था। सुल्तान के पास नावो का एक बेड़ा होता था, जिसका उपयोग सैनिक सामान को ढोने में किया जाता है। 'साहिब-ए-बरीद-ए-लश्कर विभाग' युद्ध के समय की समस्त जानकारी राजधानी भेजता था। 'तले अह' एवं यज्की नामक गुप्तचर शत्रु की सेना की गतिविधियों की सूचना एकत्र करता था । 'चर्ख' (शिला प्रक्षेपास्त्रों), फलाखून (गुलेल), गरगज (चलायमान मंच), सवत (सुरक्षित गाड़ी) जैसे युद्ध

के समय प्रयुक्त होने वाले साधनों का उल्लेख मिलता है। सैनिक सुधार की दृष्टि से अलाउद्दीन का काल सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। अलाउद्दीन ने अपने सैनिकों को नकद वेतन देने के साथ ही 6 महीने का वेतन इनाम के रूप में दिया । अलाउद्दीन ने इक्ता प्रथा को समाप्त कर दिया था परन्तु फिरोजशाह तुगलक के समय में सैनिकों को नकद वेतन के स्थान पर इक्ता देने की प्रथा पुनः प्रारम्भ कर दी गई, कालान्तर में सैनिकों का पद आनुवंशिक हो गया । पिता की मृत्यु के बाद अक्त का हकदार उसका पुत्र, पुत्र के न होने की स्थिति में दामाद, दामाद के न होने पर दास और यदि दास भी नहीं है तो निकट का सम्बन्धी होता था। इस व्यवस्था का दुष्परिणाम फिरोज तुगलक के शासन काल में देखने को मिला। सल्तनत काल में अच्छी नस्ल के घोड़े तुर्की, अरब एवं रूस से मंगाये जाते थे। हाथी मुख्यतः बंगाल से प्राप्त होते थे।

शेष अगले भाग में.....